डॉ.श्यामा प्रसाद मुखर्जी शोध अधिष्ठान,
11–अशोक रोड, नई दिल्ली
www.indiannationalism.org
राष्ट्रीय घटनाक्रम गवाक्ष मालिका
पराक्रमयुता प्रज्ञा राष्ट्राभ्युदयसाधिका
क्रमांक–9

'जाग उठो' : राष्ट्र चैतन्य का उबलता हुआ ज्वार

अपने पुस्तक ***'जाग उठो'*** के लोकार्पण के शुभ अवसर पर वक्तव्य देते हुए डॉ. ब्रह्मदत्त अवस्थी

डॉ. राममनोहर लोहिया के लोकसभा चुनाव संयोजक रहे डॉ. ब्रह्मदत्त अवस्थी की पुस्तक *'जाग उठो'* का लोकार्पण करते हुए मुख्य अतिथि माननीय श्री भारतेन्दु प्रकाश सिंघल ने कहा कि जिस देश को कभी सोने का चिड़िया कहा जाता था, जिस देश की संस्कृति, अर्थव्यवस्था विश्व में अग्रणी थी, आज उस देश की अर्थव्यवस्था अन्य देशों की अर्थव्यवस्था पर निर्भर सी हो गयी है। आज यह देश आतंकवाद और भ्रष्टाचार जैसी विषम परिस्थितियों से जूझ रहा है। श्री सिंघल ने कहा कि दिल्ली में हुए एनकाउंटर में शहीद हुए श्री मोहन चंद शर्मा की बहादुरी को सलाम न करते हुए कुछ तथाकथित राजनेता उसे फर्जी मुठभेड़ करार देने में अपनी शान समझते है। उन्होंने ने कहा कि इन्पेक्टर शर्मा एक बहादुर प्यारा बच्चा था।

पुस्तक *'जाग उठो'* के लेखक डॉ. ब्रह्मदत्त अवस्थी ने कहा कि जब राष्ट्र राज्य में बदल गया हो और सत्ता के हाथों में बंध गया हो तब राष्ट्र चेतना और राष्ट्र चिन्तन की बात करना विरलों का ही काम है। उनकी इस कृति में राष्ट्र चैतन्य का उबलता हुआ ज्वार है। अन्सत की गहराई से फूटी राष्ट्र ध्वंस की पीड़ा है, व्यक्ति के पशुता के स्वरुप में ढलते हुए स्वरुप का दर्द है, स्वेछा से विदेशी दासता में अपने को जकड़ते जाने का दु:ख है, आक्रमण और आतंकवाद, अपराध और अत्याचार, सत्ता और वोट के सामने घुटने टेक रिरियाते हुए नेतृत्व को देख मानसिक वेदना है।

श्री ब्रह्मदत्त अवस्थी जी अपनी लेखनी द्वारा ऐसे ही समसामयिक विषयों पर समाज मन की आकांक्षओं को उजागर करने का प्रयास करते आए हैं। डॉ. अवस्थी जी ने इस पुस्तक के माध्यम से राष्ट्रहित–समाजहित की सर्वोपरि कसौटी पर सारी समस्याओं का सटीक मुल्यांकन समाज के सम्मुख रखने का धैर्यपूर्ण कार्य किया है। उन्हे विश्वास है कि यह पुस्तक समाज में राष्ट्रहित को सर्वोपरि मानने का भाव जगाने में समर्थ होगी।

डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी शोध अधिष्ठान के निदेशक श्री तरुण विजय जी ने पुस्तक की भूमिका लिखते हुए कहा है कि श्री ब्रह्मदत्त अवस्थी जी ने हिन्दू धर्म के मूल संदेश को अपने में जीया है। वे राष्ट्रीय अस्मिता और मनीषा के अनन्य साधक हैं। उन्होंने विश्वास जताते हुए कहा कि राष्ट्रीयता से ओतप्रोत उनके विचारों को समेटे हुए यह पुस्तक पाठकों को प्रेरित करने में समर्थ होगी।

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए श्रीमती दमयन्ती गोयल ने कहा कि अड़तालिस निबन्धों वाली यह पुस्तक हर देशभक्त के हाथों में होनी चाहिए। समय बदला है इसलिए समस्याओं का समाधान भी परिस्थितियों के अनुरुप चाहिए। अन्त में पुस्तक के प्रकाशक श्री प्रताप वैश्य ने समारोह में उपस्थित सभी प्रबुद्धजनों के प्रति आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम की व्यवस्था डॉ. प्रभाकर अवस्थी तथा संचालन डॉ. रमा सिंह के द्वारा किया गया।

डा0 श्यामा प्रसाद मुखर्जी शोध अधिष्ठान,
सभ्यता मूलक विमर्श एवं नीति अनुसंधान केन्द्र,
11, अशोक मार्ग, नई दिल्ली–110 001
संपर्क सूत्र :– 011– 23005735–14 / 23005700 (एक्सटे.714)
टेलीफैक्स :– 011–23382569 / 23005787
अणुडाक :– director@indiannationalism.org